ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.
प्रिया

# स्वच्छता की ओर बढ़ते कदम

## छत्तीसगढ़ में स्वच्छता के सफल प्रयासों और उनसे निकली सीखों का संग्रह

© प्रिया, सितम्बर, 2016

इस पुस्तिका का प्रकाशन प्रिया द्वारा वाटर एड के सहयोग से चलायी जा रही छत्तीसगढ़ में पेयजल और स्वच्छता के लिए जिला योजना समितियों को सशक्त करने की परियोजना के अंतर्गत किया गया है।

# स्वच्छता की ओर बढ़ते कदम

## छत्तीसगढ़ में स्वच्छता के सफल प्रयासों और उनसे निकली सीखों का संग्रह

ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.

प्रिया


पार्टीसिपेटरी रिसर्च इन एशिया (प्रिया)

42, तुगलकाबाद इंस्टिट्युशनल एरिया, नई दिल्ली – 1100062

फोनः 91–11–2996 0931/32/33, फैक्सः 91–11–2995 5183

ईमेलः info@pria.org, वेबः www.pria.org

# आभार

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देश के लोगों को आजादी के लिये संघर्ष करने के साथ ही अपने जीवन में साफ-सफाई से रहने के लिये निरन्तर प्रेरित किया। ग्राम गणराज्य की उनकी परिकल्पना में स्वच्छ वातावरण में स्वस्थ चित्त रहना शामिल था। इसी वजह से व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों ही स्तरों पर उन्होंने स्वच्छता को एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया।

आजादी के बाद से ही देश में साफ-सफाई को लेकर अनेक प्रयास किये जाते रहे हैं। इस संबंध में देश भर में अलग-अलग स्थानों पर कुछ प्रेरक उदाहरण भी समय-समय पर सुनायी देते रहे हैं। 'स्वच्छ भारत मिशन' के आरम्भ के साथ इसमें एक व्यापक बदलाव दिखाई दे रहा है। अब इन उदाहरणों के साथ ही संस्थागत स्तर पर जुड़ाव भी दिख रहा है। मिशन के आरम्भ होने के बाद से चलाये जा रहे विभिन्न प्रकार के जागरूकता और क्षमता विकास के कार्यक्रमों में ग्राम पंचायत, स्कूल, आँगनबाड़ी और स्वास्थ्य केन्द्र जैसी संस्थायें करीबी रूप से जुड़ रही हैं। एक और परिणाम जो स्पष्ट दिखता है वह है गाँव के स्तर पर स्वच्छता के काम के लिये आगे आते लोग।

छत्तीसगढ़ में भी इस प्रकार के कई उदाहरण हैं जहां लोगों ने आगे बढ़कर स्वच्छता के कामों को बढ़ाने का प्रयास किया है। इन लोगों ने स्वच्छता के काम को आगे बढ़ाने के लिये जो रास्ता अपनाया है वह निश्चित ही सराहनीय है। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे लोगों और उनके कामों को बड़े स्तर पर लाया जाय जिससे इन दोनों को पहचान दिलाकर अन्य लोगों को भी इसी प्रकार के कामों के लिये प्रेरित किया जा सके। प्रस्तुत पुस्तिका में इसी प्रकार के कुछ उदाहरणों को सामने लाने की कोशिश की गयी है।

इस पुस्तिका को तैयार करने में प्रिया छत्तीसगढ़ के साथियों माया भगत, प्रवीण सिंह, एवन पटेल, अंकुर सिंह और अभिषेक कुमार का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पुस्तिका के टंकण के काम में गजेन्द्र साहू ने योगदान दिया है। इस पुस्तिका को अंतिम रूप में देने में गाँव के उन संगवारियों का विशेष योगदान है जिनके कामों के आधार पर इस पुस्तिका को तैयार किया गया है। इस पुस्तिका का प्रकाशन वाटर एड के सहयोग से किया जा रहा है।

हमें विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तिका अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सफल होगी। आपने विचार हमारे कामों को और आगे बढ़ाने में सहायक होंगे।

**प्रिया**

नई दिल्ली

# विषय क्रम


| क्रम | शीर्षक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| १. | समस्या वही सोच नई | ५ |
| २. | एक कदम स्वच्छता की ओर | ६ |
| ३. | साफ-सफाई के लिये अग्रसर राईज गर्ल्स ग्रुप | ८ |
| ४. | योजना बनाओ स्वच्छता पाओ | ९ |
| ५. | अपना श्रम अपना शौचालय | १० |
| ६. | एक जतन स्वच्छता की ओर | ११ |
| ७. | गाँव को मिली लोटाछाप से मुक्ति | १२ |
| ८. | प्रेरक की प्रेरणा ने दिलवाया सम्मान | १३ |
| ९. | स्वयं की लागत से शौचालय निर्माण कर लोगों को दिखायी राह | १४ |
| १०. | पंचायत और महिला समूह बने मिसाल | १५ |
| ११. | स्वच्छता के काम में उम्र नहीं कोई बाधा | १६ |
| १२. | बदलाव तो लाना है | १७ |
| १३. | ठेकेदारी का विरोध कर हितग्राहियों द्वारा स्वयं के शौचालय निर्माण को बढ़ावा | १८ |
| १४. | गाँव की स्वच्छता गाँव की जिम्मेदारी | १९ |
| १५. | पारिवारिक ज्ञान से फैलती स्वच्छता | २० |

# समस्या वही सोच नई

रवेली ग्राम पंचायत के सरपंच दुर्ज लाल साहू न केवल युवा हैं बल्कि नयी सोच भी रखते हैं। रायपुर जिले के अभनपुर जनपद पंचायत में आने वाले रवेली ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या लगभग ४८०० है। अन्य गाँवों की ही तरह रवेली गाँव के अधिकांश लोग भी कुछ दिन पहले तक खुले में शौच करते थे। इसका परिणाम यह था कि गाँव में गंदगी और बीमारी का बोल-बाला था। इस बीच दुर्ज लाल को जनपद पंचायत की ओर से आयोजित कार्यशाला में जलबंध शौचालय के बारे में जानकारी मिली। इसके बाद बनी सोच ने दुर्ज लाल को ग्राम पंचायत में स्वच्छता के लिये एक अभियान चलाने का रास्ता दिखाया। दुर्ज लाल के इस अभियान में गाँव को खुले में शौच से मुक्त बनाना भी शामिल था।

अभियान के आरम्भ में दुर्ज लाल ने महसूस किया कि गाँव के लोग अच्छी गुणवत्ता वाले टिकाऊ शौचालय का निर्माण कराना चाहते हैं। किन्तु इसकी लागत अधिक होने के कारण बहुत कम ही लोग शौचालय बनाने के लिये आगे आ रहे थे। ऐसे में दुर्ज लाल ने उन्हें जल बंध शौचालय के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि कैसे कम जगह और कम खर्च में बदबू रहित शौचालय बनाकर गंदगी और बिमारी (मच्छरों से होने वाली) दोनों से छुटकारा पाया जा सकता है। लोगों के बीच इस बात को और व्यापक तरीके से फैलाने के लिये उन्होंने स्थनीय स्तर पर कार्य कर रही स्वैच्छिक संस्था के लोगों के साथ मिलकर कुछ जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी कराया। स्वच्छता और साफ-सफाई के काम को बढ़ावा देने के लिये उन्होंने युवा समूह के सहयोग से लोगों के घर-घर जाकर मिलने का कार्यक्रम बनाया। लोगों को नियमित रूप से स्वच्छता के लिये प्रेरित किया जा सके इसके लिये उन्होंने सार्वजनिक स्थानों पर समूह चर्चा और चौपाल का आयोजन करने के साथ ही दीवार लेखन का काम भी करवाया।

दुर्ज लाल और उनके मार्ग दर्शन में जुड़े युवा साथियों के प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि कुछ ही दिनों में रवेली ग्राम पंचायत ने गाँव में स्वच्छता के काम के लिये ग्राम स्वच्छता योजना का निर्माण किया इसके आधार पर २३० परिवारों ने अपने-अपने शौचालय का निर्माण कराया। गाँव में लगभग २०० अन्य परिवार शौचालय बनाने के कामों में लगे हुये हैं। दुर्ज लाल का मानना है कि अक्टूबर २०१६ तक उनका गाँव खुले में शौच करने की समस्या से मुक्त हो जायेगा।

गाँव में आ रहे बदलाव के बारे में दुर्ज लाल का मानना है कि लोगों को जानकारी देने के साथ ही नियमित सहयोग और मार्गदर्शन की अवश्यकता होती है। गाँव के लोगों के सहयोग और दुर्ज लाल के सोच के आधार पर रवेली ग्राम पंचायत ने स्वच्छता की ओर कदम बढ़ाने की शुरूआत कर दी है।

# एक कदम स्वच्छता की ओर....

छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले का इरगवां ग्राम पंचायत लखनपुर जनपद पंचायत का एक हिस्सा है। इस ग्राम पंचायत में कुल परिवारों की संख्या ४१० है जिसमें लगभग १४२८ लोग रहते हैं। राजकुमारी इस ग्राम पंचायत की प्रेरक हैं जो पिछले दो वर्षों से ग्राम पंचायत में स्वच्छता और साफ-सफाई के लिये प्रयासरत हैं। लगभग २ वर्ष पूर्व इस ग्राम पंचायत के मात्र ६ घरों में ही शौचालय की व्यवस्था थी। अन्य घरों मे शौचालय नही था तथा लोग खुले मे ही शौच करने जाते थे। राजकुमारी ने महसूस किया कि शौचालय के अभाव में गाँव की महिलाओं को शौच करने के लिए दूर जंगल में जाना पड़ता है। माहवारी के दिनों में तो महिलाओं और लड़कियों को और भी समस्याओं का सामना करना पड़ता था।

इन सभी समस्याओं को देखते हुए राजकुमारी ने एक प्रण लिया कि वे कुछ ऐसा करेंगी जिससे की गाँव की महिलाओं को इस प्रकार की समस्याओं का सामना न करना पड़े। इसके लिये उन्होंनें शुरूआत में गाँव के सभी लोगों को खुले में शौच करने से होने वाली हानियों को लेकर लोगों को जागरूक किया। मुहिम बड़ी होने के कारण उन्हें काफी दिक्कतों का सामना भी करना पड़ा।

परिस्थितियों और चुनौतियों से जूझने के लिये राजकुमारी ने एक समूह (स्व-सहायता) बनाने का निर्णय लिया। समूह के लिये उन्होंने इरगवां गाँव की कुछ महिलाओं को अपने साथ जोड़ा। एक चर्चा के दौरान उन्होंनें सभी सदस्यों को स्वच्छता अभियान की जानकारी देते हुये जागरूक करने का प्रयास किया। उन्होंनें सभी सदस्यों को अपने परिवार के लोगों से खुले मे शौच न करने एवं शौचालय बनवा कर उपयोग करने की सलाह दी।

समूह की सभी महिलाओं से उन्हें इस काम में समुचित सहयोग प्राप्त हुआ। किन्तु गाँव में लोगों की आर्थिक स्थिति सही नही होने के कारण सभी लोग शौचालय का निर्माण कराने में अक्षम थे। इस प्रकार की दिक्कतों को देखते हुए राजक. ुमारी ने सोचा इसके लिए उन्हे ही कुछ करना होगा। अपने समूह की कुछ महिलाओं को लेकर तत्कालीन कलेक्टर से मिलने का निर्णय लिया। बात-चीत के दौरान उन्होंने अपने गाँव की समस्याओं से उन्हें अवगत कराया। कलेक्टर द्वारा इस पर त्वरित कार्यवाही करने का आश्वासन दिया गया। उन्होंने यह भी कहा कि पहले समूह के सभी सदस्य शौचालय का उपयोग करें जिससे लोग प्रेरित होंगे। कलेक्टर के कहने पर समूह की कुछ महिलाओं ने शौचालय निर्माण करने का प्रशिक्षण लिया। इससे महिलाओं को सशक्त होने के साथ आमदनी प्राप्त करने का भी अवसर मिला।

समूह के सदस्यों ने अपने बचत का उपयोग करते हुये अपने-अपने घरों में शौचालय का निर्माण कराया। उनके इन प्रयासों में गाँव वालों का भी सहयोग प्राप्त हुआ। समूह के इन कामों को देखते हुये गाँव के अन्य घरों के लोग भी अपने-अपने घरों में शौचालय का निर्माण करने लगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि शौचालय का निर्माण उसी गाँव

की महिला राजमिस्त्रियों के द्वारा किया गया। राजकुमारी के मनोबल और गाँव के लोगों के सहयोग से लगभग २ वर्ष के अंदर ही गाँव के सभी घरों में शौचालय का निर्माण हुआ। अप्रैल २०१६ में ग्राम पंचायत इरगवां को कलेक्टर द्वारा खुले में शौच से मुक्त गाँव घोषित किया गया।

गाँव के लोग अब गाँव में स्वच्छता को और बेहतर बनाये रखने के लिये प्रयासरत हैं। ग्राम पंचायत के द्वारा खुले में शौच करने वाले व्यक्तियों पर आर्थिक दण्ड का प्रावधान भी रखा गया है जिसके तहत ५०० रूपये का जुर्माना ग्राम पंचायत कोष में जमा किया जाता है।

राजकुमारी के परिश्रम ने उनके सपने को सच कर दिखाया और ऐसा करके उन्होंनें गाँव में एक मिसाल कायम किया। राजकुमारी के अनुसार 'अगर कुछ अच्छा करना है तो एक अच्छी सोच की जरूरत होती है। अच्छे सोच के माध्यम से बड़े से बड़े सपने को साकार किया जा सकता है'।

# साफ-सफाई के लिये अग्रसर राईज गर्ल्स ग्रुप

त्योहार का दिन हो या छुट्टी का दिन, मातृ दिवस हो या डांडिया का नाच, पारागाँव ग्राम पंचायत के लोग इसे मिल-जुल कर स्वच्छता से मनाते हैं। स्वच्छता के संबंध में उनकी जिम्मेदारी का एहसास कराता है पारागाँव के स्कूल व कॉलेज में अध्ययनरत किशोरी बालिकाओं और युवतियों का राईज (उदय) गर्ल्स समूह। यह समूह प्रत्येक रविवार को ग्राम पंचायत में डांडिया नाच का आयोजन कर लोगों को एकत्र करता है और स्वच्छता संबंधी व्यवहारों के बारे में जानकारी देते हुए खुले में शौच से होने वाले बीमारियों के संबंध में जागरूक करता है।

राईज गर्ल्स समूह को तैयार करने में इसके सदस्यों के साथ ही एक बड़ा योगदान है जनपद पंचायत अभनपुर की सदस्य मनीषा साखरे का। उनके नियमित मार्गदर्शन का ही असर है कि राईज गर्ल्स समूह कि १५ सदस्य नियमित रूप से अपने गाँव में प्रभावशाली बदलाव लाने का प्रयास कर रही है।

ग्राम पंचायत पारागाँव में अन्य समस्याओं के साथ ही गंदगी एक बडी समस्या थी। गाँव के लोगों को अपने घर से बाहर निकल कर कहीं भी आने-जाने के दौरान गंदगी और बदबू का सामना करना पड़ता था। गंदगी से गाँव की हालत इतनी खराब थी कि लोगों को उत्सवों के समय साफ जगह खोजना मुश्किल होता था। इसी समस्या को ध्यान में रखकर मनीषा साखरे ने गाँव की नवयुवतियों को राईज गर्ल्स समूह के रूप में इकट्ठा किया और उन्हें स्वच्छता के बारे में कुछ सोच कर काम करने को कहा। समूह की नवयुवतियों ने त्योहारों और उत्सवों को ही गंदगी दूर करने का माध्यम बनाया।

डांडिया तथा अन्य लोक कलाओं के माध्यम से राईज गर्ल्स समूह ने ग्राम की महिलाओं को अपने घरों में शौचालय निर्माण के लिए अपने परिवारों को प्रेरित किया। लोगों को जागरूक करने के साथ-साथ राईज समूह के सदस्यों ने श्रीमती मनीषा साखरे के नेतृत्व में अपने गाँव के तालाबों की साफ-सफाई के लिये भी ग्रामीणों को प्रेरित किया। पारागांव के निवासी नियमित प्रत्येक रविवार को अपने ग्राम के सभी तालाबों व निर्मल घाटों की सफाई करते है जिससे निस्तारी का उपयोग अच्छे से किया जा सके। गाँव की स्वच्छता को बढ़ाने के लिये राईज ग्रुप ने गाँव में सडकों के किनारे व स्कूलों में पेड़-पौधे लगवाने में भी सहयोग दिया।

मनीषा साखरे का पूरा प्रयास है कि जनपद पंचायत के सभी गांव पूर्ण रूप से स्वच्छ और खुले में शौच से मुक्त हो सकें। गाँव के लोगों ने भी जान लिया है कि गंदगी से बीमारी फैलती है और बीमारियों से त्योहार का उल्लास खत्म हो जाता है।

मनीषा साखरे के अनुसार 'किशोरी बालिकाओं द्वारा आगे आकर अपने गाँव को सम्पूर्ण स्वच्छ बनाने की प्रक्रिया ने हमारे क्षेत्र की महिलाओं को अपने सामाजिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक एवं एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है'।

# योजना बनाओ स्वच्छता पाओ

सरगुजा जिले के अंधला ग्राम पंचायत की सरपंच हैं ४० वर्षीय तनुजा। पहली बार सरपंच बनी शिक्षित और जागरूक महिला हैं जो अपने ग्राम पंचायत के विकास के लिये कार्य करना चाहती हैं। अंधला ग्राम पंचायत में लगभग ५५० परिवार हैं जिसमें कुल २९७१ लोग रहते हैं। इस ग्राम पंचायत को विकास के कामों के लिये जिले के द्वारा वित्तीय वर्ष २०१४-२०१५ की वार्षिक कार्य योजना सूची में शामिल किया गया था। किन्तु सही योजना के अभाव में ग्राम पंचायत को सफलता नहीं मिल पा रही थी। ऐसे में स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत उन्हें एक बड़े बदलाव को लाने का मौका मिला।

तनुजा ग्राम पंचायत क्षेत्र में होने वाली अनेक प्रकार की गंदगियों से परिचित थीं। स्वच्छ भारत मिशन की जानकारी मिलने के बाद स्वच्छता के कामों के बारे में और जानकारी हासिल की। इस दौरान वह खुद ही गाँव के सभी हिस्सों का भ्रमण करतीं और घर-घर जा कर लोगों को समझातीं कि शौचालय के उपयोग न करने से बाहर जो गंदगी हो रही है उससे बीमारी होती है। उनका विश्वास था कि साफ-सफाई से न केवल बिमारी से बचा जा सकता है बल्कि बिमारी में होने वाले खर्च को बचा कर आर्थिक रूप से भी आगे बढ़ा जा सकता है।

इस बीच तनुजा ने गाँव में पानी की समस्या को महसूस किया और जाना कि पानी की कमी की वजह से गाँव में शौचालय निर्माण का काम प्रभावित हो रहा है। लोगों की माँग थी कि ग्राम पंचायत पानी की व्यवस्था करे तो शौचालय का निर्माण करना आसान होगा। ऐसे में तनुजा ने शौचालय निर्माण के साथ ही पानी के प्रबंधन पर ध्यान देना शुरू किया। इस बीच गाँव के लोगों में जागरूता को बढ़ाने के लिये कई कार्यक्रमों का आयोजन कया गया।

जागरूकता बढ़ने के साथ ही गाँव के लोगों ने तनुजा के काम में सहयोग देना शुरू किया। लोगों के सहयोग से ग्राम पंचायत की एक स्वच्छता योजना बनाई गई। इस योजना को लागू कराने के लिये लोगों ने ग्राम पंचायत को सहयोग दिया और अपने घरों में शौचालय बनाना आरम्भ किया। कुछ ही महीनों में गाँव के बहुत से घरों में लोगों ने शौचालय बनाये और उसका उपयोग करना आरम्भ किया। इसका प्रभाव यह हुआ कि गाँव के लोगों की खुले में शौच करने की आदत छूटने लगी। वर्ष २०१५-१६ में इस ग्राम पंचायत को स्वच्छ भारत मिशन के तहत खुले में शौच से मुक्त घोषित किया गया। तनुजा के अनुसार 'अभी तो यह विकास का पहला कदम है।' व मानती हैं कि योजना बनाकर काम किया जाय तो सफलता जल्दी मिलती है।

स्वच्छता अपनाना है, जिम्मेदारी निभाना है,
ग्राम विकास का रास्ता, खुद हमको ही बनाना है।

# अपना श्रम अपना शौचालय

ग्राम पंचायत कांदुल रायपुर जिले के धरसींवा विकासखंड के अंतर्गत एक गाँव हैं जो कि राज्य की राजधानी रायपुर के समीप बसा हुआ है। कांदुल ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या १६११ है जिसमें अधिकतर अन्य पिछड़ा वर्ग के परिवार निवासरत है। गाँव के बहुत से लोगों की आजीविका का मुख्य साधन कृषि के बाद रायपुर शहर में रोजी-मजूदरी करना है। शहर जाने वाले पुरूषों को शहर आने-जाने के दौरान रास्ते में शौच करते देख गाँव के मुख्य सड़क पर खड़े होकर शहर जाने के साधन का इंतजार करने वाली महिलाओं को बुरा लगने के साथ-साथ शर्मीदंगी महसूस होती थी।

अप्रैल २०१५ में ग्राम पंचायत सरपंच तिलेश्वरी धुरंधर ने अपने पदभार ग्रहण करने के साथ ही गाँव को सम्पूर्ण स्वच्छ बनाने के लिए संकल्प लेते हुए प्रमुख स्थानों पर शौचालय बनवाने का प्रयास प्रारंभ किया। उन्होंनें स्वच्छ भारत मिशन के स्वच्छता दूतों और स्वयंसेवी संगठनों का सहयोग लेते हुए गांव में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का नेतृत्व किया। समुदाय आधारित सम्पूर्ण स्वच्छता (सीएलटीएस) तकनीक को अपना कर उन्होंने जागरूकता रैली आयोजित कराया और घर-घर जाकर स्वच्छता की अच्छी आदतों को अपनाने और खुले में शौच से होने वाले नुकसान की जानकारी लोगों को बताया।

गाँव में शौचालय की बढ़ती माँग को देखते हुए उन्होंने व्यवस्थित कार्ययोजना का निर्माण कर क्रमबद्ध तरीके से निर्माण कार्य भी करवाना प्रारंभ किया। स्वच्छता के कार्यक्रम को आगे बढाने के लिए तिलेश्वरी धुरंधर ने मितानिन व पंचों को वार्ड-पारा वार समूह तैयार किया और काम का विभाजन किया गया। इन समूहों में से ३ सदस्यों की निगरानी समिति का भी गठन किया गया जो खुले में शौच करने वालों को रोके, उससे होने वाले नुकसान के बारे में लोगों को समझाये तथा खुले में शौच जाने वाली प्रथा को समाप्त करने में सहयोग करे।

समूह के द्वारा छुट्टी के दिन तालाबों एवं चौक-चौराहों की साफ-सफाई कर लोगों को स्वच्छता के प्रति सजग करने का काम किया जाता है। शासन द्वारा आवंटित प्रोत्साहन राशि के सीमित होने के कारण तिलेश्वरी ने सक्षम परिवारों को स्वयं के संसाधनों से शौचालय के निर्माण हेतु प्रेरित किया। इससे कई परिवारों ने स्वयं का श्रम और लागत लगाकर शौचालयों का निर्माण करवाया।

तिलेश्वरी धुरंधर के अनुसार खुले में शौच से मुक्त समुदाय के लक्ष्य को प्राप्त करने में गाँव के हर नागरिक का योगदान महत्वपूर्ण रहा। अपने कार्यों को स्वच्छता की दिशा में पहला कदम बताते हुये तिलेश्वरी कहती हैं कि पशु मल एवं कचरा प्रबंधन का सुधार करना उनका एक बड़ा लक्ष्य है जिसे साकार करने में लोगों का श्रम और सहयोग बहुत जरूरी होगा।

मिल-जुलकर गाँव को स्वच्छ बनाना है,
ग्राम विकास का रास्ता खुद हमको ही बनाना है।

# एक जतन स्वच्छता की ओर

सरगुजा जिले की बिनकरा ग्राम पंचायत में विकास के विभिन्न कामों के होने के बावजूद कई समस्यायें थीं। ग्राम पंचायत के सरपंच प्रेम साय के अनुसार आदिवासी बाहुल्य इस ग्राम पंचायत में लोग विकास तो चाहते हैं लेकिन समय के अनुसार लोगों के व्यवहार में परिवर्तन न करना एक बड़ी समस्या है। कुल ३०७ परिवारों वाले ग्राम पंचायत बिनकरा की आबादी लगभग १३८६ है। पांचवी बार सरपंच चुने गये प्रेम साय के द्वारा किये गये प्रयासों से एक बार निर्मल ग्राम पुरस्कार के रूप में चयन कर लिये जाने के बाद भी अपनी तमाम समस्याओं के कारण बिनकरा में खुले में शौच करने की समस्या बढ़ गई।

लोगों की लापरवाही व व्यवहार में परिवर्तन न होने की वजह से लोग अपने घरों में बने शौचालयों पर ध्यान नहीं देते थे। कुल परिवारों में मात्र ४५-५० परिवार ही शौचालय का उपयोग करते और शेष सभी खुले में शौच करने जाते थे। सरपंच प्रेम साय को इसे देखकर बहुत निराशा होती थी किन्तु उनके मन में उम्मीद अभी भी बनी हुई थी। विशेष रूप से उनका मन महिलाओं और लड़कियों को खुले में शौच करते देख बहुत दुखी होता था। आस-पास में जगह की कमी के कारण शौच करने के लिये महिलायें और बालिकायें शौच करने के लिए दूर के खेतों में जाती थी जहाँ पुरूष भी जाते थे। पुरूषों के भी उन्ही खेतों में जाने के कारण महिलाओं को और भी दिक्कत होती थी।

स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत ने प्रेम साय की उम्मीदों को एक बार फिर से पूरा करने का अवसर दिया। उन्होंने एक बार पुनः गाँव को खुले में शौच करने से मुक्त बनाने के लिये शौचालयों का पुनर्निर्माण करवाने की ठानी। कुछ लोगों की मदद से उन्होंने विशेष ग्राम सभा बुलाई और सभी से फिर से अपने-अपने शौचालय को सुधारने के लिये कहा। जिन लोगों के पास शौचालय नहीं था उन्हें अन्य परियोजनाओं के साथ जोड़कर सुविधायें और संसाधन दिलाने का काम किया गया। सभा में यह भी निर्णय लिया गया कि एक निश्चित समय सीमा के बाद शौचालय का उपयोग नहीं करने वालों पर जुर्माना भी किया जायेगा।

प्रेम साय के निरन्तर सोच का असर यह हुआ कि लोगों के सहयोग से ग्राम पंचायत क्षत्र में शौचालयों का पुनर्निर्माण किया गया। गाँव के लोग अब खुले में शौच नही जाते पिछले वर्ष इस ग्राम पंचायत को स्वच्छ भारत मिशन के तहत एक बार फिर से खुले में शौच से मुक्त गाँव का दर्जा प्राप्त हुआ।

स्वच्छता जरूरी है, सबको यह बतलाना है,
ग्राम विकास का रास्ता, खुद हमको ही बनाना है।

# गाँव को मिली लोटाछाप से मुक्ति

ग्राम पंचायत गिरौद, रायपुर औद्योगिक क्षेत्र के मध्य स्थित है। गिरौद ग्राम पंचायत क्षेत्र में गाँव के स्थायी निवासियों के साथ-साथ बड़ी संख्या में बाहर से आये औद्योगिक मजदूर भी निवास करते है। बढती जनसंख्या के दबाव में संसाधनों के अत्यधिक दोहन से गाँव में पेयजल संकट और खुले में शौच से होने वाली बीमारियों का प्रकोप भी बढ़ता जा रहा था। लगभग सभी लोगों के द्वारा खुले में शौच करने से गाँव को 'लोटाछाप' का दर्जा मिला हुआ था। औद्योगिक क्षेत्र के समीप बसा होने के कारण ग्राम पंचायत गिरौद प्रदूषण, नशाखोरी जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। गाँव के नागरिकों के अनुसार ग्राम पंचायत की सबसे बड़ी समस्या राजनीति, आपसी बैर, लोगों में आपसी विश्वास की कमी और गरीब-अमीर के मध्य बढ़ता अंतर है।

ग्राम पंचायत गिरौद के सरपंच चंद्रकांत नायक गाँव के नागरिकों को एकजुट करने लिए प्रयासरत है। पहले भी चंद्रकांत ने साक्षर भारत मिशन के साथ-साथ स्व सहायता समूह, गैर सरकारी संगठनों और औद्योगिक ईकाइयों को ग्रामीण विकास हेतु गाँव से जोड़ने का काम किया है। विकास की दिशा में आगे बढ़ते हुए स्वच्छ भारत मिशन के कार्यकर्ताओं के सहयोग से गाँव को खुले में शौच मुक्त बनाने की दिशा में पहल शुरू की गई। इसके लिये आम जनता के मध्य शौचालय की माँग को बढ़ाने के लिये गाँव की स्वच्छता योजना बनाई गयी। योजना बनाने के कामों में ग्रामीणों को अधिक महत्व दिया गया। उनकी समस्याओं और उनके ही द्वारा दिए गए सुझावों को पंचायत की कार्य योजना में शामिल किया गया। फलतः शौचालय निर्माण, उसके उपयोग एवं स्वच्छता के प्रति लोगों के व्यवहार में व्यापक परिवर्तन आया है। आज गिरौद ग्राम पंचायत खुले में शौच से मुक्त हो चुका है और इस पर से लोटाछाप का तमगा भी उतर चुका है।

गिरौद ग्राम पंचायत को सांसद आदर्श ग्राम योजना के अन्तर्गत चुना गया है। चंद्रकांत नायक के सहयोग से ग्राम पंचायत में ठोस और अपशिष्ट प्रबंधन योजना का भी निर्माण करवाया गया।

स्वच्छता पर अपने कदम को आगे बढ़ाते हुए अब ग्राम पंचायत गिरौद में अपशिष्ट प्रबंधन को लागू करने का कार्य करवाया जा रहा है। चंद्रकांत नायक के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य में ग्राम पंचायत स्तर पर कचरा प्रबंधन की पहल करने वाला पहला गाँव गिरौद है। उनके अनुसार संगठित और जागरूक आम नागरिकों के सहयोग से ग्राम पंचायत आगे बढ़ने को तत्पर है।

# प्रेरक की प्रेरणा ने दिलवाया सम्मान

सरगुजा जिले के लखनपुर जनपद पंचायत में स्थित है ग्राम पंचायत गुमगरा कला। इस ग्राम पंचायत में कुल ४१६ परिवार हैं जिसमें लगभग १७७१ लोग रहते हैं। २ वर्ष पूर्व इस ग्राम पंचायत में मात्र ६५ घरों मे ही शौचालय की व्यवस्था थी जो सरकार के द्वारा पहले चलाये गये निर्मल ग्राम अभियान के तहत बनाये गये थे। इनमें से भी मात्र ३०-३५ परिवार ही शौचालय का उपयोग कर रहे थे।

इसी समय ज्ञान प्रसाद यादव ग्राम पंचायत गुमगरा कला में प्रेरक के पद पर नियुक्त हुये। इन्होंने देखा कि गाँव के बहुत से घरों में शौचालय के न होने के कारण महिला और पुरूष शौच के लिये घरों से दूर खेतों में जाते हैं। अपने विद्यालय की समस्या के काम से एक बार ज्ञान प्रसाद की मुलाकात गुमगरा कला ग्राम पंचायत के सरपंच से हुई। ज्ञान प्रसाद ने ग्राम पंचायत के लोगों की खुले में शौच करने की समस्या को सरपंच से बताया। उन्होंने सरपंच को गाँव के लोगों को स्वच्छता के लिए प्रेरित करने की बात कहते हुये इस काम में खुद के सहयोग देने की बात भी कही। सरपंच के द्वारा यह कहने पर कि लोगों को प्रोत्साहन राशि उपलब्ध होने के बाद भी उनके द्वारा शौचालय नहीं बनवाया जा रहा है, ज्ञान प्रसाद ने लोगों से बात की जिससे उन्हें पता चला कि शौचालय की डिजाइन के कारण लोग शौचालय नहीं बनवा रहे हैं। अच्छे मिस्त्री का न मिलना एक अन्य समस्या थी। ऐसे में ज्ञान प्रसाद ने जनपंद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी से मिलने की योजना बनायी।

जनपद पंचायत के सी०ई०ओ० से हुई चर्चा के आधार पर उन्होंने शौचालय के निर्माण के काम के लिये स्थानीय इंजिनियरिंग कॉलेज के प्रिंसिपल को बुलाया और लोगों को शौचालय निर्माण की तकनीक का प्रशिक्षण दिलवाया। आस-पास के दूसरे गाँवों का भ्रमण करने के बाद उन्होंने कुछ मिस्त्री को लाने का काम भी किया। इसके बाद लोगों ने अपने घरों में शौचालय बनाने का काम शुरू किया। कुछ समय बाद कुछ परिवारों ने खुद से शौचालय बनाने की ठानी और ७० परिवार ने खुद अपने पैसे से शौचालय बनाये। बाकी परिवार जो खुद से शौचालय बनाने में आर्थिक रूप से सक्षम नही थे उनके लिये पंचायत ने कुछ अन्य योजनाओं का सहयोग लिया।

ज्ञान प्रसाद ने गुमगरा कलाँ के लोगों के साथ मिलकर निगरानी समिति बनाकर लोगों को खुले में शौच करने से रोक लगवाने का भी काम करवाया। इससे लोगों पर नैतिक दबाव पड़ा और बहुत से लोग शौचालय का उपयोग कर रहे हैं। इस ग्राम पंचायत को स्वच्छता को लेकर दो बार जिला कलेक्टर के द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है।

# स्वयं की लागत से शौचालय निर्माण कर लोगों को दिखायी राह

रायपुर जिले के अभनपुर जनपद पंचायत की ग्राम पंचायत है खिलोरा। पिछड़े वर्ग के लोगों की बहुतायत वाले इस ग्राम पंचायत में स्वच्छता और साफ-सफाई को लेकर कुछ लोगों ने अच्छी पहल की है। उन्हीं में से एक हैं ग्राम पंचायत क्षेत्र की मितानिन फुलेश्वरी यादव। खिलोरा ग्राम पंचायत में लगभग १६५२ लोग निवास करते हैं। एक साल पहले तक ग्राम पंचायत में कुछ ही परिवारों के पास शौचालय की व्यवस्था थी। लोगों में शौचालय बनाने को लेकर जिज्ञासा तो थी लेकिन साथ ही सरकार की ओर से मिलने वाली सहायता का भी इंतजार था।

इसी बीच स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत चलाये जा रहे कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम का आयोजन ग्राम पंचायत खिलोरा में भी हुआ। इस कार्यक्रम के माध्यम से गाँव के लोगों को षौचालय के महत्व और खुले में शौच करने के बुरे प्रभावों के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी। इस पूरी चर्चा को सहभागी तरीके से किया गया जिसमें गाँव के लोगों ने स्वयं से 'मल की गणना' की। इस पूरी प्रक्रिया से फुलेश्वरी यादव बहुत प्रभावित हुईं। कार्यक्रम के बाद जब लोगों से शौचालय बनवाने की बात की गई तो अधिकांश लोगों ने सरकार की ओर से सहायता दिलाये जाने की बात कही। ऐसे में फुलेश्वरी यादव ने तय किया कि वो स्वयं के पैसों से शौचालय का निर्माण करेंगी।

कुछ ही दिनों के बाद फुलेश्वरी यादव ने अपने घर में शौचालय निर्माण का काम आरम्भ किया। उनको देखकर उनके बगल के रहने वाले परिवार में भी शौचालय बनाने का काम शुरू हुआ। देखते ही देखते एक महीने के अंदर खिलोरा ग्राम पंचायत में लगभग ६५ परिवारों ने स्वयं का शौचालय निर्माण का काम शुरू कर दिया। इनमें से भी लगभग ४० परिवारों के द्वारा अपने घरों में शौचालय निर्माण के काम को एक महीने के भीतर पूरा कर लिया गया है। आज ये सभी घर अपने शौचालयों का नियमित उपयोग कर रहे हैं। ग्राम पंचायत के शेष परिवार भी जल्द ही अपने शौचालयों को पूरा करने के कगार पर हैं।

फुलेश्वरी यादव के द्वारा दिखायी गयी राह उन लोगों के लिये प्रेरणा का स्रोत है जो थोड़ा जागरूक हैं और जिनके पास संसाधन है किन्तु किन्ही कारणों से ऐसे लोग शौचालय बनाने के लिये सरकार की सहायता की आस लगाये बैठे हैं। फुलेश्वरी यादव जैसे लोग ही वास्तव में समाज के नेतृत्वकर्ता हैं।

# पंचायत और महिला समूह बने मिसाल

कमला बाई सरगुजा जिले के लखनपुर विकास खण्ड में आने वाले जयपुर 'ख' ग्राम पंचायत की सरपंच हैं। ग्राम पंचायत जयपुर 'ख' में कुल २६१ परिवार हैं जिनकी कुल जनसंख्या लगभग १०१८ है। दो वर्ष पहले तक इस ग्राम पंचायत के मात्र ५ घरों मे ही शौचालय की व्यवस्था थी जो सरकार के ही दूसरे कार्यक्रम में बनायी गयी थी। ग्राम पंचायत के अन्य कुछ घरों में भी लोगों ने शौचालय तो बनवाये थे किन्तु रख-रखाव की कमी के कारण या तो टूट गये थे या उनका उपयोग सही तरीके से नही हो रहा था। इन घरों के लोग अन्य शौचालय विहीन परिवारों के लोगों की ही तरह खुले मे ही शौच करने जाते थे।

कमला बाई के अनुसार अन्य महिलाओं की ही तरह उन्हें भी महिलाओं को खुले में शौच करने के लिये जाते हुये देख कर कष्ट होता था। इन समस्याओं को देखते हुए कमला बाई ने ठाना की उनके गाँव के सभी परिवार में शौचालय होना चाहिए। उन्होंने अपने मन की बात एक दिन गाँव में हुई बैठक के दौरान रखी। लोगों को यह बात अच्छी लगी पर उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि ग्राम पंचायत के पूरे घर शौचालय कैसे बनाया जाये? गाँव के गरीब लोग जो खुद से शौचालय नहीं बना सकते थे उनके लिये भी मदद का कोई रास्ता नहीं दिख रहा था।

ऐसे में कमला बाई ने एक विशेष ग्राम सभा का आयोजन किया और इसमें जनपद पंचायत के सी.ई.ओ. को बुलाया। ग्राम पंचायत की इस विशेष ग्राम सभा में पंचायत के सभी प्रतिनिधि एवं गाँव के अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। ग्राम सभा में सभी ने अपनी बात रखी और कहा कि लोग शौचालय बनाना चाहते हैं क्योंकि उन्हें बाहर जाने में समस्या होती है। जनपद सी.ई.ओ. ने गाँव के लोगों के उत्साह को देखते हुये उनकी ग्राम पंचायत को ए.आई.पी में शामिल नहीं होने के बाद भी उसके लिये कुछ करने की बात कही।

अगले ही दिन से सरपंच ने महिलाओं के समूहों को अपने साथ जोडना शुरू किया। उन्होंने घर-घर जाकर लोगों को समझाया और शौचालय के फायदे के बारे में बताया। कुछ दिन बाद लोगों को अपना शौचालय खुद से बनाने के लिये एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जनपद पंचायत से तकनीकी प्रशिक्षक को बुलाया गया। ग्राम पंचायत की तरफ से घरों में ईंट, बालू, सीमेंट आदि सामग्री की मांग के आधार पर व्यवस्था करायी गयी जिससे लोग अपने शौचालय बना सकें। ग्राम पंचायत ने शारीरिक रूप से अक्षम परिवार वालों की मदद भी की। पूरे गाँव ने एक जुट हो कर शौचालय बनाने के काम को लगभग ३ माह में पूरा कर लिया और पूरे ब्लॉक में एक मिसाल तैयार की।

# स्वच्छता के काम में उम्र नहीं कोई बाधा

सुंदरकेरा ग्राम पंचायत अभनपुर विकासखण्ड के अंतर्गत आता है जिसकी कुल जनसंख्या लगभग ३५०० है। इस ग्राम में अन्य पिछड़ा वर्ग के लोग निवास करते है। एक समय में यह गाँव केले की खेती के लिए जाना जाता था किन्तु पानी के खराब प्रबंधन से उसकी कमी होती गई। गाँव में जागरूकता होने के बाद भी अधिकतर ग्रामवासी खुले में शौच करने जाते थे। गाँव में उपलब्ध पशु धन से होने वाले कीचड़ एवं गन्दगी का सही निस्तारण का अभाव भी गाँव के लिए एक बड़ी समस्या बना हुआ था।

स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत ग्राम पंचायत में एक दिन स्वच्छता के संबंध में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में गाँव के एक नवरत्न के रूप में नामित टीकाराम पटेल भी शामिल हुये। कार्यक्रम के दौरान गाँव के लोगों को ग्राम स्वच्छता योजना के बारे में बताया गया। टीकाराम के अनुसार नवरत्न होने के बाद भी स्वच्छता के बारे में उन्हें इतनी जानकारी नहीं मिली जितनी कि इस कार्यक्रम में शामिल होने के बाद मिली।

इस चर्चा के बाद अगले दिन गाँव में स्वच्छता के आँकड़े को इकट्ठा करने का काम किया गया जिससे गाँव का विश्लेषण कर ग्राम स्वच्छता योजना बनाने में आसानी हो। योजना में अन्य कामों के साथ लोगों के सहयोग से गाँव को सम्पूर्ण स्वच्छ बनाने की पहल की गई। लोगों को स्वच्छता संबंधी व्यवहार में बदलाव लाने के साथ-साथ स्वच्छता संबंधी सभी कामों को ग्राम पंचायत की कार्य योजना से जोड़ने का प्रयास किया गया। प्रारंभ में इस काम से समुदाय को जोड़ना बहुत कठिन लग रहा था। किन्तु टीकाराम पटेल जैसे नेतृत्वकर्ता के कारण गाँव-समाज के सभी वर्ग के बच्चे, युवा, महिला, पुरूष, बुजुर्ग एवं प्रभावशाली ग्रामीणों ने अपना योगदान दिया।

लगभग ७० वर्ष की उम्र होने के बाद भी ग्राम स्वच्छता योजना बनाने की पूरी प्रक्रिया में बैठक बुलाने से लेकर गाँव के स्वच्छता संबंधी विजन तैयार करने आदि कार्यों में टीकाराम ने आगे बढकर सहयोग किया। अलग-अलग समय व स्थानों पर भी उन्होंने लोगों को संवाद के द्वारा स्वच्छता के व्यवहार को अपनाने के लिए प्रेरित किया। टीकाराम ने अपने गाँव के युवाओं को सबसे पहले जागरूक करने का संकल्प लिया क्योंकि उनका मानना है कि युवा हमारी शक्ति है। उन्होनें गाँव के हर वार्ड के बीच से युवाओं को चुना और स्वच्छता के प्रति जागरूक करना शुरू किया। टीकाराम ने अपने समुदाय के लोगों के बीच इस बात को समझाया जिसके बाद लोग धीरे-धीरे अपने गांव को खुले में शौच मुक्त करने के लिए जुड़ने लगे। इसके इस प्रयास में ग्राम पंचायत के प्रतिनिधियों ने भी साथ दिया।

आज सुंदरकेरा खुले में शौच से मुक्त हो चुका है। श्री टीकाराम पटेल ने "मेरा गांव - मेरा तीर्थ" की परिकल्पना पर कार्य करते हुए छोटे-छोटे प्रयासों द्वारा अपने गाँव में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज गाँव में विकास संबंधी किसी भी कार्य के लिए लोग पंचायत के साथ जुड़ते है तथा ग्राम सभा के महत्व को भी समझ पाए हैं।

# बदलाव तो लाना है

३५ वर्षीय यशोमती पहली बार सरगुजा जिले के ग्राम पंचायत रजपुरी कलाँ की सरपंच बनीं हैं। इस ग्राम पंचायत में कुल ६२० परिवार है और जनसंख्या लगभग २१२३ है। रजपुरी कलाँ को जिले के ग्रामीण विकास विभाग के द्वारा वर्ष २०१४-२०१५ के लिये बनाये गये वार्षिक कार्य योजना (ए.आई.पी.) में शामिल किया गया। इसी दौरान स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत इस ग्राम पंचायत में महात्मा गांधी राष्ट्रीय गामीण रोजगार योजना (मनरेगा) के तहत शौचालय बनाने का प्रस्ताव जनपद से मिला। परन्तु जागरूकता की कमी और मनरेगा में मजदूरी का भुगतान समय पर नही होने के कारण लोगों ने शौचलय के निर्माण के कोई रूचि नहीं दिखाई।

बदलाव लाने के लिये प्रयासरत यशोमती को ऐसी स्थिति में सहारा मिला गाँव की महिला समूह की सदस्यों से। यशोमती ने महिला समूह की एक बैठक में साफ-सफाई के विषय पर चर्चा की। बैठक में महिलाओं को खुले में शौच करने के दौरान आने वाली दिक्कतों के बारे में पूछा गया। महिलाओं ने बताया कि दिन या रात पुरूष तो कहीं भी शौच को चले जाते हैं पर महिलाओं को दिक्कत होती है इसलिये हमें शौचालय बनाना है। यशोमती ने बताया कि मनरेगा के माध्यम से रोजगार बढ़ाकर शौचालय का निर्माण कराया जा सकता है तो महिलाओं को उनकी बात अच्छी लगी।

महिलाओं के सहयोग से गाँव में शौचालय बनाने का अभियान शुरू किया गया। ग्राम पंचायत के द्वारा लोगों को शौचालय निर्माण सामग्री दिया गया। शौचालय निर्माण के बाद लोग इसका उपयोग करें इसके लिये मुहल्ले के स्तर पर समितियाँ बनायीं गयीं। यशोमती की पहल और स्थानीय महिलाओं के सहयोग से रजपुरी कलाँ खुले में शौच से मुक्त गाँव घोषित किया जा चुका है।

# ठेकेदारी का विरोध कर हितग्राहियों द्वारा स्वयं के शौचालय निर्माण को बढ़ावा

रायपुर जिले के अभनपुर विकासखण्ड का एक ग्राम पंचायत है भरेंगा। इस ग्राम पंचायत की अधिकांश आबादी अनुसूचित जाति और अन्य पिछड़े वर्ग की है। जागरूकता की कमी से गाँव में साफ-सफाई और स्वच्छता की स्थिति बहुत ही खराब थी। ऐसी स्थिति में जब स्वच्छ भारत मिशन को लेकर गाँव या जनपद स्तर पर चर्चायें हुईं तो ग्राम पंचायत की सरपंच मुगेश्वरी भट्ट पर बहुत दबाव पड़ने लगा। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि स्वच्छता का काम कैसे किया जाय, कहाँ से शुरू किया जाय। इसी बीच स्वैच्छिक संस्थाओं के माध्यम से गाम पंचायत में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम ने मुगेश्वरी भट्ट को न केवल स्वच्छता के बारे में जानकारी दी बल्कि साफ-सफाई को बढ़ावा देने का एक सही रास्ता भी दिखाया।

जागरूकता कार्यक्रम के दौरान चर्चा में संस्था के लोगों ने शौचालय निर्माण की लागत और उसको कम करने के तरीकों की जानकारी दी। ग्राम पंचायत के लोगों को इन बातों पर विश्वास नहीं हुआ तो यह तय किया गया कि दूसरे ग्राम पंचायतों के कुछ अच्छे उदाहरणों को दिखाया जाये जिससे लोगों की सीख बेहतर बन सके।

कुछ दिनों बाद सरपंच मुगेश्वरी भट्ट के नेतृत्व में भरेंगा ग्राम पंचायत लोगों ने पास की कुछ पंचायतों का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने देखा कि कैसे गाँव के लोगों ने खुद से अपने शौचालयों को कम खर्च में अपनी सुविधा के अनुसार बनाया है। इन शौचालयों की गुणवत्ता भी अच्छी थी। मुगेश्वरी भट्ट और उनके साथियों के लिये यह भ्रमण बहुत प्रभावी रहा। लौटने के बाद उन्होंने भरेंगा में एक ग्राम सभा का आयोजन किया और सभी ग्राम वासियों को अपने अनुभव बताये।

सरपंच के साथ ग्राम पंचायत के सदस्यों के अनुभवों को सुनने के बाद भरेंगा गाँव के लोगों ने तय किया कि उनेक गाँव के सभी हितभागियों के द्वारा शौचालयों का निर्माण खुद के द्वारा किया जायेगा। इसी दौरान दूसरे गाँव के अनुभवों के आधार पर कई परिवारों ने बिना सरकारी सहायता के ही अपना शौचालय निर्माण करने की बात कही।

आज मुगेश्वरी भट्ट की अगुवाई में भरेंगा ग्राम पंचायत के लगभग २०० से अधिक परिवारों ने बिना किसी ठेकेदार की मदद से स्वयं के गुणवत्तापूर्ण शौचालय बनाने में सफलता पा ली है।

# गाँव की स्वच्छता गाँव की जिम्मेदारी

छत्तीसगढ़ की राजधानी से लगभग २० किमी दूर स्थित है ग्राम पंचायत भटगांव। यह ग्राम पंचायत रायपुर जिले के अभनपुर जनपद पंचायत का हिस्सा है। इस ग्राम पंचायत की कुल आबादी लगभग २५०० है। ग्राम पंचायत में मुख्य रूप से अनुसूचित जाति और जनजाति के लोग रहते हैं। परम्परा के अनुसार ग्राम पंचायत के निवासी खुले में शौच के लिये जाया करते थे। इसका परिणाम यह होता था कि बारिश का मौसम शुरू होते ही पूरे गाँव में गंदगी फैल जाती थी और लोग बीमार होने लगते थे। गाँव वालों को यह समझ में नहीं आता था कि हर साल उनके गाँव में बीमारी कैसे फैल जाती है।

लगभग दो साल पहले स्वच्छता मिशन के आरम्भ होने के साथ ही ग्राम पंचायत में बहुत से लोगों के द्वारा शौचालय बनाने और गाँव को साफ बनाने की चर्चा की जाने लगी। ऐसी ही चर्चा सरपंच होने के नाते उमेन्द्र साहू के पास भी पहुँची। जागरूक और जिम्मेदार नागरिक होने के कारण उमेन्द्र साहू ने ग्राम पंचायत की बैठक में इस विषय पर चर्चा की। शुरू में बहुत से लोगों ने इस काम में कोई रूचि नहीं दिखायी। इस पर उमेन्द्र साहू ने गाँव में जागरूकता के कई कार्यक्रम करवाये। इससे गाँव के लोगों में स्वच्छता के विषय पर कुछ जागृति आई। लोगों की सहमति से उमेन्द्र साहू ने महिला समूहों, स्कूल, आँगनबाड़ी, स्वास्थ्य केन्द्र में जाकर साफ-सफाई की व्यवस्था पर चर्चा करवाई। इन चर्चाओं से उन्हें ग्राम पंचायत की स्वच्छता के बारे में और बेहतर तरीके से समझ बनाने का मौका मिला

इन पूरी जानकारियों के आधार पर उमेन्द्र साहू ने लोगों के साथ मिलकर ग्राम पंचायत की ग्राम स्वच्छता योजना का निर्माण कराया और ग्राम पंचायत के प्रस्ताव के साथ जनपद पंचायत को भेजा। इस बीच गाँव के लोगों ने तय किया कि शौचालय का निर्माण लोगों के द्वारा स्वयं ही जिम्मेदारी लेकर किया जायेगा। जनपद पंचायत के द्वारा बजट को स्वीकृत किये जाने के बाद उमेन्द्र साहू ने लगभग ३५० परिवारों को शौचालय की सामग्री को उपलब्ध करवाने में सहयोग दिया।

ग्राम पंचायत में जागरूकता बढ़ने के साथ ही लोगों ने अपने गाँव को साफ रखने के लिये कमर कस ली है। गाँव के लोगों का मानना है कि उमेन्द्र साहू का नेतृत्व ग्राम पंचायत के लोगों को आगे बढ़ने में मददगार साबित हुआ है।

# पारिवारिक ज्ञान से फैलती स्वच्छता

रायपुर जिले के भैंसमुड़ा ग्राम पंचायत की जागेश्वरी वर्मा के पति राज मिस्त्री हैं। परिस्थितियों के कारण जागेश्वरी वर्मा को शादी के बाद अपने पति के काम में हाथ बँटाने का मौका मिला। धीरे-धीरे जागेश्वरी को अपने पति के काम में हाथ बँटाने के साथ ही अपनी हुनर को तराशने का मौका भी मिला। अब उन्होंने अपने हुनर को दिखाने के साथ ही स्वच्छता से जुड़े कामों से अपने गाँव में साफ-सफाई को बढ़ाने की जिम्मेदारी ली और इससे उनको संतुष्टि भी मिल रही है।

जागेश्वरी बताती हैं कि भैंसमुड़ा के अधिकांश लोग अपने रोजी-रोटी के लिये आस-पास के कारखानों में काम करते हैं। कमाई बढ़ने से गाँव के लोगों के पास परिसम्पत्तियाँ तो बढ़ी किन्तु उनकी आदतों में परिवर्तन नहीं आ रहा था और लोग खुले में ही शौच करने को जाते थे। जागेश्वरी इस बात को लेकर खिन्न रहती थीं।

पंचायत के पिछले चुनाव में परिवार वालों की सहमति से उन्होंने वार्ड पंच का चुनाव लड़ा और चुनाव जीत भी लिया। इससे उनका आत्मविश्वास और बढ़ा। इस बीच ग्राम पंचायत में जब स्वच्छता के काम शुरू हुये तो जागेश्वरी ने गाँव की कुछ महिलाओं से बात करके उनके घरों में शौचालय निर्माण में सहयोग देने की सहमति दी। जागेश्वरी ने केवल शौचालय के निर्माण में ही नहीं बल्कि उनके घर के सदस्यों को शौचालय के उपयोग से होने वाले लाभ को भी बताया। जागेश्वरी ने गाँव वालों को दो जलबंध वाले शौचालय निर्माण के संबंध में लोगों को जानकारी देकर उनके भ्रमों को दूर करने का प्रयास किया।

अब तक भैंसमुड़ा ग्राम पंचायत में लगभग १०० शौचालयों को बनाने में जागेश्वरी ने अपना योगदान दे चुकी हैं। आस-पास के गाँव के लोग भी जागेश्वरी को अपने घरों में शौचालय को बनाने के लिये बुलाते हैं क्योंकि उनकी निगाह में वे शौचालय बनाने की विशेषज्ञ हैं। राजमिस्त्री के ज्ञान का उपयोग जागेश्वरी ने जिस प्रकार अपने और आस-पास के गाँवों की स्वच्छता को बढ़ाने में किया है वह अनुकरणीय है।

र परिवहन
2
सांसद आदर्श ग्रा. पं. गिरोंद
ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन
(14 वे वित्त मद से पोषित)
कचरा परिवहन
1

# प्रिया के बारे में

प्रिया सहभागी शोध एवं प्रशिक्षण का एक अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र है जिसकी स्थापना 1982 में हुई। अपने कार्यक्रमों को करने के लिये विश्व के स्तर पर प्रिया के साथ उत्तर से दक्षिण तक लगभग 3000 गैर सरकारी संगठनों से साझेदारी है और देश के कई राज्यो में क्षेत्रीय कार्यालय हैं।

**वर्तमान में समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रिया के कार्यक्रमों का निम्न क्षेत्रो में हस्तक्षेप है:**

- **लडकियों और महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित** करने के लिए एक अनुकुल माहौल बनाना और विभिन्न सार्वजनिक संस्थानों के कामकाज में ऐसी बाधाओं को खत्म करना जिससे घरों, स्कूलों, शॉपिंग कॉम्पलेक्सों, सड़क, कार्यस्थल इत्यादि स्थानों पर लड़कियों और महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोका जा सके। 'कदम बढाते चलो' अभियान, जिसका सफल संचालन हरियाणा में ग्रामीण महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकने में किया गया, युवाओं द्वारा चलाया जा रहा एक अभियान है जिसे अन्य स्थानों पर भी आरम्भ किया जा रहा है।
- **पेयजल और सफाई को सभी लोगों तक पहुँचाने के लिये नये हल ढूँढने के काम** का केन्द्र बुनियादी सेवाओं को सही ढंग से वितरित करने, विशेषकर अनुसुचित जनजाति और शहरी गरीब बस्तियों में, करने पर है। प्रिया के द्वारा युवाओं की क्षमताओं और दक्षताओं को बढ़ाया जाता है, लड़कियों और महिलाओं को शामिल करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिससे जेंडर संबंधित भेदभाव और विकृतियों को खत्म किया जा सके। शहरी गरीब समुदायों के युवा (लड़के और लड़कियाँ) नई तकनीकों जैसे जी.पी.एस. और मोबाईल फोन आधारित सर्वेक्षण इत्यादि को सीख रहे है, जिससे पेयजल और सफाई की सेवाओं के लिये नगर पालिकाओं को सामुदायिक फीडबैक दिया जा सके।
- **मानवीय और संस्थागत क्षमताओं** को बढ़ाना जिससे सरकारी, व्यावसायिक जगत के कामों को और पारदर्शी तथा जवाबदेह तरीकों से किया जा सके और जेंडर को मुख्य धारा में लाने और महिलाओं के नेतृत्व को सक्षम बनाना जा सके। भारत और विश्व के दक्षिणी देशों, जो पारंपरिक और ऐतिहासिक रूप से अल्प विकसित रहे हैं, इस तरह की क्षमताओं की कमी को विशेष रूप से हल करने का प्रयास किया जा रहा है।

ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.
प्रिया

**पार्टीसिपेटरी रिसर्च इन एशिया (प्रिया)**
42, तुगलकाबाद इंस्टिट्युशनल एरिया, नई दिल्ली – 1100062
फोन– 91–11–2996 0931/32/33, फैक्स– 91–11–2995 5183
ईमेल – info@pria.org, वेब – www.pria.org

**सहयोग**

WaterAid